International Journal of Scientific Research in Engineering and Management (IJSREM)
Volume: 10 Issue: 01 | Jan - 2026 SJIF Rating: 8.586 ISSN: 2582-3930

भूमंडलीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव एवं विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता

मीनाक्षी शर्मा
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
जयपुर

भूमिका

वर्तमान समय में भूमंडलीकरण विश्व की प्रमुख प्रक्रिया बन चुकी है। इसका प्रभाव केवल अर्थव्यवस्था या संस्कृति तक ही सीमित नहीं रहा है, बल्कि पर्यावरण पर भी गहरा असर देखा जा रहा है। साथ ही, पर्यावरण संरक्षण के लिए विद्यार्थियों में जागरूकता विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। यह पुस्तक इन्हीं दो पहलुओं—भूमंडलीकरण के पर्यावरणीय प्रभाव तथा विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता—का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करती है।

❖ भूमंडलीकरण : एक परिचय

1.1 भूमंडलीकरण की परिभाषा

भूमंडलीकरण (Globalization) वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यापार, निवेश, सूचना, प्रौद्योगिकी, संस्कृति और विचार सीमाओं के पार तीव्रता से आदान-प्रदान होते हैं। यह आर्थिक एकीकरण, वैश्विक बाजारों का उभरना, औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों का अंतरराष्ट्रीयकरण तथा संचार और परिवहन के साधनों के कारण लोगों, वस्तुओं और विचारों के बीच व्यापक नेटवर्क का निर्माण करता है। सरल शब्दों में, भूमंडलीकरण दुनिया को अधिक निकट, परस्पर निर्भर और संवादात्मक बनाता है।

1.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भूमंडलीकरण कोई नई घटना नहीं है; इसका विकास कई चरणों में हुआ है—

प्रारंभिक ऐतिहासिक चरण (प्राचीन–मध्यकाल)

- सिल्क रोड, समुद्री मार्ग और व्यापारिक मार्गों के माध्यम से सभ्यताओं के बीच वस्तुओं और विचारों का आदान-प्रदान।
- धार्मिक और सांस्कृतिक प्रसार—जैसे बौद्ध धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान।

उद्यमशील यूरोपीय साम्राज्यवाद (15वीं–19वीं शताब्दी)

- समुद्री खोजों, उपनिवेशवाद तथा कच्चे माल और बाजार नियंत्रण के कारण वैश्विक आर्थिक संरचनाओं का निर्माण।
- अंतरराष्ट्रीय व्यापार और मुद्रा का विस्तृत नेटवर्क।

औद्योगिक क्रांति और आधुनिक आर्थिक विस्तार (18वीं–20वीं शताब्दी)

- मशीनरी, परिवहन (रेल, जहाज) और संचार (टेलीग्राफ, टेलीफोन) के विकास से वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाएँ संभव हुईं।
- विश्व युद्धों के बाद बहुराष्ट्रीय संस्थाओं (जैसे विश्व बैंक, IMF, WTO) का उदय।

सूचना और नव-औद्योगीकरण युग (20वीं सदी का उत्तरार्ध–21वीं सदी)

- इंटरनेट, सस्ता परिवहन और उदारीकरण से पूँजी, सूचना और सेवाओं का तीव्र प्रवाह।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विस्तार और वैश्विक उत्पादन नेटवर्क का गठन।

1.3 विश्व के देशों पर भूमंडलीकरण का प्रभाव

सकारात्मक पहलू

- आर्थिक विकास और निवेश—विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (FDI) से पूँजी, तकनीक और रोजगार।
- विकासशील देशों के लिए अवसर—निर्यात-आधारित मॉडल से कुछ देशों की तीव्र प्रगति।
- तकनीकी आदान-प्रदान—स्वास्थ्य, सूचना, शिक्षा और विज्ञान में उन्नति।
- उपभोक्ताओं के लिए लाभ—विविधता, प्रतिस्पर्धी कीमतें और बेहतर सेवाएँ।
- सांस्कृतिक व शैक्षिक विनिमय—अध्ययन, पर्यटन और नवाचार को प्रोत्साहन।

नकारात्मक पहलू

- आर्थिक असमानता—लाभ सीमित वर्गों तक सिमट सकते हैं।
- स्थानीय उद्योगों पर दबाव—छोटी इकाइयाँ वैश्विक प्रतिस्पर्धा में पिछड़ सकती हैं।
- पर्यावरणीय दबाव—उत्पादन-उपभोग में वृद्धि, संसाधन क्षरण और प्रदूषण।

- सांस्कृतिक प्रभाव—सांस्कृतिक समरूपता से स्थानीय परंपराओं का क्षय।
- नीतिगत निर्भरता—वैश्विक बाजार उतार-चढ़ाव से संवेदनशीलता।

1.4 भारत में भूमंडलीकरण का विस्तार

भारत में 1991 के आर्थिक सुधारों—उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण—के बाद भूमंडलीकरण का प्रसार तीव्र हुआ।

आर्थिक सुधार और नीतिगत परिवर्तन

- 1991 के सुधार—टैरिफ कटौती, पूँजी बाजारों का खुलना और निजी निवेश को बढ़ावा।
- निवेश और व्यापार में वृद्धि—FDI, विदेशी तकनीक और निर्यात-उन्मुख उद्योगों का विस्तार (विशेषकर IT और सेवा क्षेत्र)।

औद्योगिक और सेवा क्षेत्रीय प्रभाव

- IT और BPO का उभार—बेंगलुरु, हैदराबाद, पुणे जैसे शहरों में रोजगार और निर्यात में वृद्धि।
- विनिर्माण में वैश्विक एकीकरण—आपूर्ति श्रृंखलाओं से जुड़ाव।

सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन

- रोजगार और शहरीकरण—नई नौकरियाँ, परंतु अव्यवस्थित शहरी विस्तार और बुनियादी ढाँचों पर दबाव।
- हाशिए के समूह—कृषि और पारंपरिक उद्योगों को चुनौतियाँ, अस्थायी/अनौपचारिक रोजगार।

संस्कृति और उपभोग व्यवहार

- जीवन-शैली में परिवर्तन—वैश्विक ब्रांड, मीडिया और इंटरनेट का प्रभाव।
- भाषा और संस्कृति—कुछ पारंपरिक प्रथाओं में कमी, वैश्विक संस्कृति का प्रसार।

पर्यावरणीय और नीतिगत चुनौतियाँ

- प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव—औद्योगीकरण और अवसंरचना से जल, वन और खनिजों पर असर।
- नियमन—प्रदूषण, अपशिष्ट प्रबंधन और क्रियान्वयन की चुनौतियाँ।

भूमंडलीकरण ने भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ा और तकनीक, निवेश व विकास के अवसर दिए, किंतु साथ-साथ पर्यावरणीय दबाव, सामाजिक असमानताएँ और स्थानीय संस्थाओं पर प्रभाव जैसी जटिल चुनौतियाँ भी उभरीं। संतुलित एवं सतत नीतियों से ही इसके लाभ दीर्घकालिक और समावेशी बनाए जा सकते हैं।

❖ भूमंडलीकरण के पर्यावरण पर प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव

- पर्यावरणीय तकनीकों का आदान-प्रदान
- वैश्विक पर्यावरणीय समझौते
- वैज्ञानिक अनुसंधान में सहयोग

नकारात्मक प्रभाव

- औद्योगीकरण और प्रदूषण में वृद्धि
- प्राकृतिक संसाधनों का दोहन
- वन विनाश और जैव विविधता में कमी
- कचरा व प्लास्टिक उत्पादन में वृद्धि
- कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि

भूमंडलीकरण पर्यावरण के लिए अवसर भी है और चुनौती भी। सतत विकास तभी संभव है जब पर्यावरण सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाए और वैश्विक सहयोग सुदृढ़ किया जाए।

❖ भूमंडलीकरण और विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता

- पर्यावरण जागरूकता का अर्थ
- विद्यार्थियों को समस्याओं, कारणों, प्रभावों और समाधानों के प्रति सजग बनाना
- जागरूकता के प्रमुख उद्देश्य
- संरक्षण की भावना विकसित करना
- सतत जीवन-शैली अपनाना
- प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता

विद्यालय/विश्वविद्यालय स्तर पर उपाय

- पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल करना
- क्षेत्र भ्रमण, वन-विहार
- स्वच्छता अभियान
- पौधारोपण कार्यक्रम
- विज्ञान एवं पर्यावरण प्रदर्शनी
- जल/ऊर्जा संरक्षण गतिविधियाँ

निष्कर्ष

विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता विकसित करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। भूमंडलीकरण के युग में बढ़ते पर्यावरणीय संकटों के बीच शिक्षा संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। जागरूक विद्यार्थी ही भविष्य में स्वच्छ, सुरक्षित और सतत पर्यावरणयुक्त समाज का निर्माण कर सकते हैं।

उपसंहार

भूमंडलीकरण ने विकास के नए मार्ग खोले हैं, पर साथ ही पर्यावरणीय संकटों को भी बढ़ाया है। इसलिए विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना समय की मांग है। शिक्षा ही वह माध्यम है जो भावी पीढ़ियों में संवेदनशीलता और जिम्मेदारी की भावना विकसित कर सकती है।

संदर्भ सूची (Bibliography / ग्रंथ सूची)

1. मिश्रा, आर. के. (2018). *पर्यावरण अध्ययन एवं संरक्षण.* नई दिल्ली: शारदा प्रकाशन।
2. शर्मा, मीना (2020). *वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था.* जयपुर: राजस्थान पब्लिशिंग हाउस।
3. गुप्ता, एस. (2019). *पर्यावरण शिक्षा.* लखनऊ: यूनिवर्सल बुक डिपो।
4. पाण्डेय, वी. (2021). *भूमंडलीकरण का सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव.* दिल्ली: अकादमिक पब्लिशर्स।
5. UNEP (2022). *Global Environmental Outlook*. संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम।
6. World Bank (2023). *Globalization and Development*.
7. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020, भारत सरकार।
8. मंत्री, एस. (2017). *पर्यावरण और समाज.* मुंबई: लोकवाणी प्रकाशन।
9. राजपूत, आर. (2018). *पर्यावरण संरक्षण में विद्यार्थियों की भूमिका.* जयपुर: सुदर्शन प्रकाशन।
10. UNESCO (2020). *Education for Sustainable Development*.